

मरिज़ापुर हाईवे पर मौत का अंधेरा, मंडरा रहा बड़े हादसे का खतरा!

वर्षिय सूची (Table of Contents):

- >> मरिज़ापुर हाईवे पर छाया अंधेरा 200 स्ट्रीट लाइटों महीनों से खराब, हादसों का बढ...
- >> ब्लैक स्पॉट में तब्दील हुआ मुख्य मार्ग...
- >> भ्रुहना से अटल चौराहे तक का हाल 7 किलोमीटर लंबे मार्ग पर पसरा सन्नाटा...
- >> बारिश और पहाड़ी क्षेत्र का जोखिम सड़क पर वन्यजीवों के आने से बड़ी दुर्घटना का ख...
- >> वन्यजीवों के टकराव से अनहोनी का डर...
- >> वधियाचल धाम आने वाले श्रद्धालुओं की मुश्किलें रात के समय आवाजाही में भारी परे...
- >> महिलाओं, बुजुर्गों और बच्चों के लिए हाईवे का सफर बना असुरक्षित...
- >> सुरक्षा और अपराध का बढ़ता ग्राफ...
- >> करोड़ों की लागत का कोई फायदा नहीं आधुनिक लाइटों का रखरखाव हुआ शून्य...
- >> वभाग की घोर लापरवाही दिन में जलती है लाइटें, शिकायतों पर भी नहीं होता असर...
- >> स्थानीय लोगों और व्यापारियों की प्रशासन से मांग सुरक्षा के लिए तत्काल हो मरम्मत...
- >> अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQs)...

Mirzapur News: उत्तर प्रदेश के मरिज़ापुर जिले से एक बेहद चिंताजनक खबर सामने आ रही है। वधियाचल धाम को जोड़ने वाले मुख्य हाईवे पर प्रशासनिक लापरवाही के कारण सुरक्षा व्यवस्था पूरी तरह से वेंटिलेटर पर आ गई है। इस महत्वपूर्ण मार्ग पर लगी सैकड़ों स्ट्रीट लाइटें बंद पड़ी हैं, जिससे पूरा इलाका रात होते ही घने अंधेरे के आगोश में समा जाता है।

श्रावण मास (सावन) और आगामी त्योहारों के समय जहां इस मार्ग पर लाखों श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ती है, वहीं बजिली वभाग और संबंधित अधिकारियों की उदासीनता किसी बड़ी दुर्घटना को खुला आमंत्रण दे रही है। स्थिति इतनी गंभीर हो चुकी है कि स्थानीय नागरिकों के साथ-साथ दूर-दराज से आने वाले यात्रियों में भी डर का माहौल है।

मरिज़ापुर हाईवे पर छाया अंधेरा: 200 स्ट्रीट लाइटें महीनों से

मरिज़ापुर मुख्य मार्ग पर रात के समय सफर करना अब किसी खतरे से खाली नहीं रह गया है। हाईवे के एक बड़े हिस्से में लगी आधुनिक स्ट्रीट लाइटें पछिले कई महीनों से पूरी तरह से ठप पड़ी हैं। पर्याप्त रोशनी न होने के कारण इस मार्ग पर चलने वाले वाहन चालकों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है, जिससे हर पल किसी गंभीर सड़क हादसे की आशंका बनी रहती है।

ब्लैक स्पॉट में तब्दील हुआ मुख्य मार्ग

>> वजिबिलिटी बेहद कम:लाइटें बंद होने की वजह से रात के समय ड्राइवरों को सामने का रास्ता साफ दिखाई नहीं देता।

>> ओवरटेकिंग के दौरान खतरा:घने अंधेरे में तेज रफ्तार वाहनों द्वारा ओवरटेक करने के कारण रोजाना छोटी-मोटी दुर्घटनाएं हो रही हैं।

>> पैदल यात्रियों की जान जोखिम में:सड़क पार करने वाले लोगों को अंदाजा नहीं मलि पाता कि वाहन कतिनी दूरी पर हैं।

भरुहना से अटल चौराहे तक का हाल: 7 किलोमीटर लंबे मार्ग पर पसर

अगर धरातल पर वास्तविक स्थिति की बात करें तो भरुहना से लेकर वधियाचल के अटल चौराहे तक का पूरा इलाका अंधेरे के साम्राज्य में बदल चुका है। इस 7 किलोमीटर के लंबे दायरे में करीब 600 से अधिक स्ट्रीट लाइटें और हाईमास्ट लाइटें लगाई गई थीं, ताकि पूरा क्षेत्र दूधिया रोशनी से जगमगा सके।

लेकिन वडिबना यह है कि इनमें से 200 से अधिक लाइटें पूरी तरह से खराब हो चुकी हैं। रात होते ही इस लंबे स्ट्रेच पर सन्नाटा पसर जाता है। इस मार्ग पर सफर करने वाले लोगों का कहना है कि प्रशासन केवल कागजों पर विकास के दावे कर रहा है, जबकि जमीनी हकीकत इसके बिल्कुल उलट है।

देश के कानूनी अधिकारों और जनहति से जुड़ी नागरिक सुरक्षा नियमावली की जानकारी के लिए आपइंडिया कोड पोर्टल डिजिटल डेटाबेसपर जाकर कानूनी नयिमें की लेटेस्ट अपडेट चेक कर सकते हैं।

बारिश और पहाड़ी क्षेत्र का जोखिम: सड़क पर वन्यजीवों के आने स

वधियाचल का यह पूरा इलाका भौगोलिक दृष्टि से पहाड़ी और घने जंगलों से घिरा हुआ है। मानसून यानी बारिश के मौसम में इस क्षेत्र का जोखिम कई गुना अधिक बढ़ जाता है। वन्यजीवों के प्राकृतिक आवास पास में होने के कारण जहरीले सांप, नीलगाय, सयार और जंगली सुअर अक्सर भोजन और पानी की तलाश में मुख्य सड़क पर आ जाते हैं।

वन्यजीवों के टकराव से अनहोनी का डर

पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण सांपों और अन्य जीवों का सड़क पर रेंगना आम बात है। अंधेरे के कारण वाहन चालकों को ये जीव दिखाई नहीं देते। यदि अचानक कोई नीलगाय या सयार किसी तेज रफ्तार गाड़ी के सामने आ जाए, तो वाहन का असंतुलित होना तय है, जिससे जानलेवा हादसा हो सकता है। पूर्व में भी ऐसी घटनाएं सामने आ चुकी हैं, लेकिन इसके बावजूद वभिाग नींद से जागने को तैयार नहीं हैं।

वधियाचल धाम आने वाले श्रद्धालुओं की मुश्किलें: रात के समय

वधियाचल धाम भारत के प्रसिद्ध शक्तिपीठों में से एक है, जहां प्रतिदिन हजारों की संख्या में श्रद्धालु मां वधियावासिनी के दर्शन करने पहुंचते हैं। दूर-दराज के राज्यों से आने वाले यात्री अक्सर देर रात ट्रेनों या बसों के माध्यम से मरिजापुर स्टेशन या बस स्टैंड पहुंचते हैं। वहां से मंदिर की ओर जाते समय उन्हें इस अंधेरे और असुरक्षित मार्ग से गुजरना पड़ता है।

श्रद्धालुओं को रेलवे स्टेशन से उतरकर पैदल या ऑटो के सहारे जाना पड़ता है। अंधेरे का फायदा उठाकर असामाजिक तत्व और लुटेरे भी सक्रिय हो सकते हैं। पवित्ति सावन मास में जब देश के कोने-कोने से कांवरण और भक्त यहां आते हैं, तब इस प्रकार की अव्यवस्था उत्तर प्रदेश प्रशासन और स्थानीय नगर निकाय की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल खड़े करती है।

महिलाओं, बुजुर्गों और बच्चों के लिए हाईवे का सफर बना असुरक्षित

मार्ग पर छाई इस अव्यवस्था और घने अंधेरे का सबसे बुरा असर समाज के संवेदनशील वर्गों पर पड़ रहा है। स्ट्रीट लाइटें गुल होने के कारण महिलाओं, वृद्धजनों और छोटे बच्चों को पैदल चलने या सड़क पार करने में सबसे ज्यादा दक्कितों का सामना करना पड़ रहा है।

सुरक्षा और अपराध का बढ़ता ग्राफ

- >> महिलाओं की सुरक्षा: अंधेरे रास्तों पर महिलाओं के साथ छिनैती या छेड़खानी जैसी वारदातों का खतरा हमेशा बना रहता है।
- >> बुजुर्गों को चलने में दक्कित: सड़कों पर बने गड्ढे अंधेरे में दरिवाई नहीं देते, जिससे बुजुर्ग गिरकर चोटिल हो रहे हैं।
- >> क्राइम का खतरा: इंटरनेट पर सुरक्षा और डिजिटल क्राइम से जुड़े मामलों जैसे अशोक खरात केस लीक वीडियो मामले की तरह, डार्क स्पॉट्स पर फजिकल क्राइम का ग्राफ भी तेजी से बढ़ता है।

करोड़ों की लागत का कोई फायदा नहीं: आधुनिक लाइटों का रखरखाव ह

स्थानीय व्यापारियों और जागरूक नागरिकों का कहना है कि कुछ समय पहले इस हाईवे को सुंदर, आकर्षक और सुरक्षित बनाने के उद्देश्य से सरकार द्वारा करोड़ों रुपये का बजट पास किया गया था। इस भारी-भरकम राशि से पूरे 7 किलोमीटर के क्षेत्र में अत्याधुनिक एलईडी स्ट्रीट लाइटें और ऊंचे हाईमास्ट पोल लगाए गए थे।

शुरुआत में तो सब कुछ ठीक रहा, लेकिन नयिमति मेंटेनेंस और रखरखाव के अभाव में यह पूरी योजना अब दम तोड़ती नजर आ रही है। अधिकारियों ने टेंडर जारी करके लाइटें तो लगवा दीं, लेकिन उनके फ्यूज होने या खराब होने पर उन्हें बदलने के लिए कोई

परमानेंट मैकेनज्म तैयार नहीं किया गया, जिससे जनता का पैसा पूरी तरह बर्बाद हो रहा है।

वभिग की घोर लापरवाही: दनि में जलती है लाइटें, शकियातों पर

बजिली वभिग और नगर पालकिका की लापरवाही का आलम यहीं खत्म नहीं होता। स्थानीय लोगों ने एक बेहद चौंकाने वाला खुलासा किया है। कुछ महीनों पहले मीडिया में यह खबर प्रमुखता से प्रकाशित हुई थी कि जो लाइटें रात में बंद रहती हैं, वे दनि के उजाले में बेवजह जलती रहती हैं।

दनि में बजिली की इस घोर बर्बादी पर तो कोई ध्यान नहीं दिया गया, और न ही उन जम्मेदार कर्मचारियों पर कोई कार्रवाई हुई जो इसके लिए उत्तरदायी थे। जनता द्वारा कई बार लिखित शकियात दर्ज कराने और ऑनलाइन पोर्टल पर स्टेटस चेक करने के बावजूद, अधिकारी केवल आश्वासन का लॉलीपॉप थमा देते हैं।

यदि आप किसी प्रतियोगी परीक्षा या सरकारी नौकरी की तैयारी कर रहे हैं और नवीनतम सलिबस की तलाश में हैं, तो आप UGC NET 2026 नया एग्जाम पैटर्न और पीडीएफ सूचीको ऑनलाइन डाउनलोड कर देख सकते हैं।

स्थानीय लोगों और व्यापारियों की प्रशासन से मांग: सुरक्षा के

मरिजापुर के स्थानीय नवासियों, दुकानदारों और व्यापार मंडल के सदस्यों ने अब लामबंद होकर जिला प्रशासन और उच्च अधिकारियों के खिलाफ आक्रोश व्यक्त किया है। व्यापारियों का कहना है कि अंधेरे के कारण शाम ढलते ही बाजारों में ग्राहकों की संख्या कम हो जाती है, जिससे उनका व्यवसाय भी बुरी तरह प्रभावित हो रहा है।

सभी ने मलिकर जलाधिकारी (DM) से मांग की है कि सावन के मेले और आगामी पर्वों को ध्यान में रखते हुए इस 7 किलोमीटर के दायरे का तुरंत नरीक्षण कराया जाए। जतिनी भी 200 लाइटें बंद पड़ी हैं, उन्हें तत्काल प्रभाव से नई लाइटों से रिप्लेस किया जाए या उनकी मरम्मत कराई जाए, ताकि किसी नरिदोष की जान दुर्घटना में न जाए।

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQs)

मरिजापुर मुख्य हाईवे पर भुहना से लेकर वधियाचल अटल चौराहे के बीच लगी कुल 600 लाइटों में से लगभग 200 स्ट्रीट लाइटें पछिले कई महीनों से बंद पड़ी हैं।

वधियाचल क्षेत्र पहाड़ी और जंगली होने के कारण बारिश में सांप, नीलगाय और सयार जैसे वन्यजीव सड़क पर आ जाते हैं। अंधेरे में इनसे टकराकर गाड़ियों के दुर्घटनाग्रस्त होने का खतरा सबसे ज्यादा है।

अंधेरे की समस्या से प्रभावित यह क्षेत्र भुहना से शुरू होकर वधियाचल धाम के अटल चौराहे तक फैला हुआ है, जिसकी कुल

लंबाई लगभग 7 किलोमीटर है।

देर रात ट्रेन या बस से पहुंचने वाले दर्शनार्थियों को घने अंधेरे में पैदल चलने और हाईवे पार करने में काफी असुरक्षा और दक्कितों का सामना करना पड़ता है।

हाँ, स्थानीय नवासियों और व्यापारियों द्वारा कई बार संबंधित विभाग में शिकायत दर्ज कराई गई है, लेकिन महीनों बीत जाने के बाद भी मरम्मत का काम शुरू नहीं हुआ है।

हाँ, पूर्व में ऐसी खबरें प्रकाशित हुई थीं कि जो लाइटें रात में बंद रहती हैं, वे दिन के उजाले में अनावश्यक रूप से जलती रहती हैं, जिससे ऊर्जा की भारी बर्बादी होती है।

सड़क पर रोशनी न होने के कारण सुरक्षा के लहजा से महिलाओं, बुजुर्गों और छोटे बच्चों को सबसे अधिक कठिनाई उठानी पड़ रही है।

व्यापारियों और नवासियों की मांग है कि आगामी त्योहारों और सावन मेले के मद्देनजर सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए सभी बंद लाइटों की तत्काल मरम्मत कराई जाए।